Sociology Principal of Sociology BA Part I
सामाजिक व्यवस्था Paper I

Date
18/7/20

Social System

Principal

समाज चाहे वह आदिकालीन हो या आधुनिक, कोई - गड़बड़झाला या अस्पष्ट अवधारणा नहीं है। प्रत्येक समाज में ही कुछ न कुछ व्यवस्था हुआ करती है। सर्वश्री मैकाइवर तथा पेज - ने जैसा कि पहले ही एक अध्याय में लिखा जा चुका है, समाज को रीति-रिवाजों और कार्य प्रणालियों की, अधिकार और पारस्परिक सहयोग की, समूह और मानव व्यवस्था के नियमों और स्वाधीनताओं की एक व्यवस्था system माना है ऐसा कोई समाज नहीं होता है जिसमें कुछ - न कुछ रीति रिवाज (usages) न हो, रीति-रिवाज - सामाजिक या व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित होते हैं जैसे खाने-पीने बात-चीत करने मिलने-मिलाने - शादी ब्याह करने आदि के सम्बन्ध में विभिन्न रीति-रिवाज पाये जाते हैं।

उसी प्रकार समाज के सदस्यों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति की कुछ सर्वमान्य कार्य प्रणालियाँ (Procedures) होती हैं। जिससे कि व्यवस्थित ढंग से आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे। इन कार्य-प्रणालियों को ही सर्वश्री मैकाइवर तथा पेज ने सामाजिक संस्थाएँ कहा है उनके अनुसार संस्था सामूहिक क्रिया की विशेषता बतलाने वाली कार्य प्रणाली के स्थापित स्वरूप या अवस्था को कहते हैं। उसी प्रकार समाज की विभिन्न इकाइयों जैसे व्यक्ति, परिवार, समिति आदि के व्यवहार व क्रियाओं को नियमित एवं नियन्त्रित करने

— 2

Scanned by TapScanner

करने हेतु अधिकार की भी एक व्यवस्था होती है। और साथ ही पारस्परिक सहयोग का एक ताना बाना भी सामाजिक जीवन मे ओत-प्रोत रहता है। परन्तु ये सब एक दूसरे से असम्बद्ध और स्वतंत्र होकर नहीं रहते। ये सब एक सम्बद्ध समय के संयुक्त भाग हैं उसी रूप मे सब मिलकर सुचारु ढंग से कुछ स्थापित नियमानुसार क्रियाशील रहते हैं जिसके फलस्वरूप उस समाज के सदस्यो का पारस्परिक सम्बन्ध तथा सामाजिक जीवन सम्बद्ध होता है इसी को सामाजिक व्यवस्था (Social system) कहते हैं अतः स्पष्ट है कि सामाजिक व्यवस्था वह अवस्था है जिसमे समाज के विभिन्न निर्माणक भाग एक — सांस्कृतिक व्यवस्था के अन्तर्गत एक दूसरे से नकारात्मक सम्बन्ध के आधार पर सम्बद्ध सहयता की एक ऐसी सन्तुलित स्थिति को बनाये रखते हैं जिसके फलस्वरूप अपने स्वीकृत अथवा उपलब्धित उद्देश्यो के अनुसार विभिन्न संस्थाओ और सामाजिक अन्तःक्रियाओ की निर्धारित व नियमित होती है

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक व्यवस्था की अनेक निर्माणक इकाइयाँ होती है। इनमे से प्रत्येक इकाई अपने उद्देश्य या आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपने अपने स्थान पर क्रियाशील रहती है यदि इसको मनमाने ढंग से कार्य करने को छोड़ दिया जाए तो समाज की संरचना एक ही दिन मे चकनाचूर हो जाएगी

=

Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College Sasaram

Scanned by TapScanner